"साकुरा-साकुरा"

(जापान के प्रसिद्ध गायक एवं गीतकार "ताओतारो मोरीयामा" के गीत का भावानुवाद)

- सुरेश ऋतुपर्ण

ओ मेरी अंतरंग!
फिर मिलेंगे एक बार
वहीं, उसी राह पर
बिखरे हैं जहाँ साकुरा के फूल!

यही तो दिया था वचन
विदा होने से पहले कि
फिर मिलेंगे ज़रूर।

ओ मेरी अंतरंग सहचर!
मैं हाथ हिलाते
नतसिर लूँगा तुमसे विदा
अपने इस शहर की गलियों में
खो जाने से पहले
जिन्हें हर ओर से
साकुरा के फूलों ने घेरा है।

जाने कितने अच्छे और बुरे दिनों के ताप में
तप कर निकले हैं हम!
लेकिन तुम्हारे होठों पर
मैंने देखी है केवल मुस्कान!

और जब काल, मुझे खींच लेगा
ज़मीन की गहराईयों में
तब उन कुंदन तपे दिनों की याद
भर देगी मुझमें असीम ऊर्जा
कि मैं धुन्ध में डूबी गहराईयों के आर-पार
पहचान लूँगा उस अनाम धुन को
जो हमारे होठों पर
रह-रह कर थिरकती थी।

साकुरा, साकुरा
कैसे लिपटे हैं शाखों से ये फूल
शायद जानते हैं
बिछुड़ने का क्षण नहीं है दूर।
फिर भी हवाओं के क्रूर थपेड़ों को सहते
कसकर थामे हैं एक-दूसरे को

अलविदा!
अलविदा ओ मेरी सहयात्री!
आ गया है वह मोड़ अब हम निकल जाएँगे
दिलों में सँभाले एक-दूसरे की याद
दूर जाती उस अनजान डगर पर।
पर जाने से पहले
कह देना चाहता हूँ वे शब्द
जिन्हें कहने के लिए
तरसता रहा हूँ न जाने कब से
ओ मेरी अंतरंग मित्र!
मेरा प्यार और मेरी शुभाकांक्षा
चलेगी तुम्हारे साथ लगातार।

मैं जानता हूँ
शहर की ये हड़बड़ाती भागमभाग
हमारे साथ समानान्तर चलती है
और उधर साकुरा के
खिले फूलों की पंखुरियाँ
शाखों से बिछुड़ रहीं हैं
इस उम्मीद के साथ कि फिर जन्म लेंगे।

इस विदा बेला में
आँसू न बहाना ओ मेरी अंतरंग मित्र!
मैं तुम्हारे सुर्ख नर्म होठों पर
देखना चाहता हूँ वही मुस्कान
जो तुम्हारी पहचान है

देखो!
शहर की झिलमिलाती रोशनी में
नहाते हुए
आकाश के आँगन में
नाच रहीं हैं
साकुरा की झड़ती पंखुरियाँ

विदा.....
ओ मेरी अंतरंग मित्र.... विदा.....
पर इस विश्वास के साथ
कि फिर मिलेंगे
ऐसे ही..... इसी राह पर
जहाँ बिखरी हैं
सकुरा की पंखुरियाँ

हाँ फिर मिलेंगे
नहीं है यह चिर–विदा.....
फिर मिलेंगे.....

ओ मेरी अंतरंग मित्र
फिर होगा मिलन
पूरा करेंगे फिर हम अपना वचन।

मैं दूर देश क्यूँ जाता हूँ?

– अनुराग पांडेय

समय समय के अनुसारों में,
निश दिन फँसता मझधारों में।
अविरत पतवार चलाता हूँ ,
माँ मैं दूर देश को जाता हूँ।

रंग उत्सव की मधुर है बेला,
मैं इस पार नितांत अकेला।
सिर्फ श्वेत श्याम रह जाता हूँ,
माँ मैं दूर देश को जाता हूँ।

वहाँ रोचना राखी टीका,
इधर मेरा उल्लास भी फीका।
रेशम के तारों से खींच भी नहीं मैं पाता हूँ ,
माँ मैं दूर देश को जाता हूँ।

दूर दीवाली की झिलमिल से,
शांत सूक्ष्म से काठ के घर में।
एक दीप मैं भी जलाता हूँ,
माँ मैं दूर देश को जाता हूँ।

वो बहना के हाथ की मेहंदी,
अपना हो घर का सपना।
अर्थ जगत में पिसता जाता हूँ ,
माँ मैं दूर देश को जाता हूँ।

मैं पाषाण नहीं हूँ माता,
वर्षपूर्ण एक ही अवसर आता।
पितृ चरणों को जा छू पाता हूँ,
माँ मैं दूर देश को जाता हूँ।

प्रियजनों की बुझती आँखें ,
दरवाज़े की ओर ही ताके,
.....
क्या देख नहीं मैं पाऊँगा,
क्या मिल भी नहीं मैं पाऊँगा
.....
मैं दौड़ा भागा जाता हूँ ,
मां मैं दूर देश को जाता हूँ।

माँ मैं जल्दी आता हूँ.....
माँ मैं जल्दी आता हूँ.....